This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ अस्य श्रीगरुडोपनिषन्महामंत्रस्य
ब्रह्मा ऋषिः॥ त्रिष्टुप् गायत्री छंदः॥ गरुडरूपी श्री
महाविष्णुर्देवता॥ क्लों बीजं॥ स्वराट् शक्तिः॥ ... श्री
लं कं॥ मम सकल दुष्ट जंतु विनाशनार्थे जपे विनियोगः॥
ॐ गरुडात्मने अंगुष्ठाभ्यां॥ ॐ वैनतेयाय तर्जनी
भ्यां॥ ॐ ताक्ष्यार्य मध्यमाभ्यां॥ ॐ खगेश्वराय अनामि
काभ्यां॥ ॐ सर्पपाशनेत्रे कनिष्ठिकाभ्यां॥ ॐ नानालंकृ
तशरीराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यासः॥
ॐ गरुडात्मने हृदयाय नमः॥ ॐ वैनतेयाय शिरसे स्वाहा॥
ॐ ताक्ष्यार्य शिखायै वषट्॥ ॐ खगेश्वराय कवचा

२ दीर्घबाहुं चक्रसंकं सर्वाभरणभूषितं =
यहं॥ ॐ सर्पपाशनेनेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ नानालंकृत ॥१२॥
शरीराय अस्त्राय फट्॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बंधः॥
ॐ महद्रात्रिकराकारे पूर्णचंद्रनिभाननं॥ जनितावा
मर्कोटि यज्ञसूत्रं तु वासुकिः॥ १ तक्षकः कटिसूत्रं
५ को तु हारः कर्कोटकस्तु ते॥ पद्मस्तु दक्षिणे कर्णे महापद्म स्वग ८
स्तु वामतः॥ २॥ शंखपालो शिरोरत्ने गुलिकस्तु भूषणं॥ ३॥
भुजांतरे॥ ८ ध्यायेत् त्रिसंध्यादेवालौ न कल्के
विषनाशायते क्षिप्रं वायुरिव धूम्रमिवांबुदं॥ ओं नमो भगवते रुद्र
वर्णांगं जनान् अस्मिन् मंत्रं भुं॥ ८ एवं सर्वमुक्त
नमामृ... जन सन्निभं॥ पादि... प्राणभृत... रायि
म२।

Acc. No. ~~3126~~ M-1912
Title - गरुडोपनिषत्
Author - ?
Date - ?
Subject - वेद उपनिषत्
Folio - 3
Xerox - 3
Scribe - नारायणगणेश कळंबकर

K K S U LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1912
Dist. Nagpur

Checked 2012

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

चच्चुंडोरुं तुंड त्रुटि फणिवस्त्रा रच्छपुं त्राकिता स्यंवं देध
रो मयं तस्त्रग पतिमम ले स्वर्ण वर्णं सुपर्णं ॥ ६ ॥ ॐ नमो
भगवते महागरुडाय श्रीविष्णु वाहनाय त्रैलोक्य परिपू
जिताय परीहि एहि महागरुड दुष्टनागान् छिंधि छिंधि
जावेत्राय आविशाय व द्धा हुं फट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ नमो पु
स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्मविषाप्रव स्यामि जे ला नारायणारदो शुक
से नाप ट ह से नो ट ह स्पनेपे ट ह स्पातिरि द्रायई श्री
भरद्वाजाय भरद्वाजे जीवंतु ग्रामभ्यः शिष्येभ्यः प्राय
छुनूं ॥ ॐ नत्कारी मुल्का रीविष नाशनी ॥ विषदूषणी ॥ विषप्रनष्टं विषं हतमिंद्रवज्रेण
विष सर्पिणी हतं विषं नष्टं

पातं तेब्रह्मणापानमिंद्रस्य वज्रेण स्वाहा ॥ दिव्यानां नागानां २
ओ नारिक्षगतानां सर्पाणां व श्रि कानाले तानाप्रलता नां ओ
नरिक्षगतानां सर्पाणां रश्रि काना नागोध्यानां गृहे गोधानां
मूषकानां ॥ रात्रिमानां जंगमानां चखचराति खूचरतिय घन
नकेदूत स्वयदि वान तकः स्वय ॥ यदि वासुकि दूत स्वयदि
वासुकी स्वयं ॥ यदि तक्षक दूत स्वं यदि वा तक्षकः स्वयं सि ॥
यदि कर्कोटक दूत स्वं यदि वा कर्कोटकः स्वयं ॥ यदि शंखक दू
त स्वं यदि वा शंखकः स्वयं ॥ यदि कुलिक दूत स्वं यदि वा कु
लिकः स्वयं ॥ यदि पौंड्रक दूत स्वं यदि वा पौंड्रकः स्वयं ॥ यदि
पद्मक दूत स्वं यदि वा पद्मकः स्वयं ॥ महापद्मक दूत स्वं य

२

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

दिवाप मक्रस्वयं ॥ यथे ला पुत्र कृद्तस्वंप धे लापुत्र कृस्वा
मादे वालि कृद्ग्न स्वंय दिवा कूरी [illegible] स्वयं ॥ मो इमामूढा
वि या ममा वास्या पो णमा स्यां [illegible] या हा द [illegible] पृं न
न दं शालि सर्पाः प इमा महा [illegible] मा वास्या पौर्णमा
स्या म ध्यिया नो धार यन्त्या [illegible] नेन ते दंशानि सर्पाः ॥ अर्ध
ब्राह्मणानूर्ध्व हिला [illegible] णेन मो क्षपति ॥ यो नं ब्राह्मणो ग्राह
यिताच शुष्पामो क्षयति ॥ स ह [illegible] ब्राह्मणान्ग्राह यिता
मनसा मो क्षयति साह ॥ भगवान्ब्रह्मा ॥ ॐ तत्सु स्वाय
विद्महे सुपर्णपक्षाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥

सुपर्णोसि गरुत्मान्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं छंदश्चक्षुस्तो २
मजाला साम ते तनुर्वामदेव्यं बृहद्रथंतरे पक्षौ यज्ञाय
ज्ञं पुच्छं छंदास्यंगानि धिष्णियाः शफा यजूंषि नाम
विश्वो प्रमध्यनः ॥ प्र विराममा वि नोहि छमानाः
देवाः सुरा स्तपरा भवन्तु ॥ तोन्वेकंजे णमघ न्निवारय
निवारय इत्युपनिषत् ॥ इति गरुडोपनिषत्समाप्तं ॥ ६ ॥
हस्तपुस्तकं गणेशास्य सुतनारायणेन लिखितं
परोपकारार्थं शुभं भवतु ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

K K S U LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1912
Dist Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=02.07.20 11:15
,TRANSFERRED=2020/07/02 at 11:17:10
,PAGES=3
,TYPE=STD
,NAME=S0003250
,Book Name=M-1912-GARUDOPANISHAT
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection